द्रव्य और गुण (प्राथमिक और गौण)

जॉन लॉक का मानना है की पदार्थ या द्रव्य वह है जिसमें मूल गुण रहते हैं| वास्तव में द्रव्य " अज्ञेय" है क्योंकि हमारा द्रव्य के साथ कभी साक्षात्कार या सीधा संपर्क या संबंध स्थापित नहीं हो पाता है| हमारा संबंध द्रव्य के गुणों के साथ ही होता है जो हमारे मन में अपनी प्रतिकृति या छाप छोड़ जाते हैं| लॉक के अनुसार वस्तुओं या पदार्थों में एक ऐसी शक्ति होती है जिसके द्वारा वे प्रत्यय उत्पन्न करते हैं| इस शक्ति को उन्होंने गुण कहा है| क्योंकि गुण केवल शक्ति है इसलिए शक्ति के लिए शक्तिमान के रूप में इन गुणों के लिए आधारभूत द्रव्य का अनुमान करते है| लॉक बाह्यप्रत्यक्षवादी ना होकर बाह्यअनुमेंयवादी हैं| इनके अनुसार बाह्य पदार्थ का प्रत्यक्ष नहीं होता, केवल अनुमान होता है| प्रत्यक्ष केवल गुणों का होता है, द्रव्य का नहीं| इसे प्रत्ययप्रतिनिधित्ववाद या प्रत्ययप्रतिबिंबवाद भी कहते हैं| लॉक के अनुसार ज्ञान का एकमात्र स्रोत प्रत्यक्ष है| अतः द्रव्य का प्रत्यक्ष ना होने के कारण उन्होंने द्रव्य को अज्ञेय कहा है| द्रव्य की कल्पना मिश्र प्रत्यय है जो कई सरल प्रत्ययों के मिश्रण से बनी है| सरल प्रत्यय ही स्वतंत्र वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं| द्रव्य की कल्पना में उनकी स्वतंत्र सत्ता का समावेश है| हमारे लिए द्रव्य गुणों का समुदाय मात्र है| गुणों के अतिरिक्तछ उनका आधारभूत द्रव्य का होना आवश्यक है, भले ही वह हमारे लिए अज्ञेय हो| द्रव्य " सर्वत्र एक-सा" और " मैं नहीं जानता क्या" है| लॉक द्रव्य के विषय में यह कहते हैं, फिर भी उन्होंने तीन प्रकार के द्रव्यों को माना- ईश्वर, आत्मा और जड़तत्व| आत्मा चेतन तत्व है जिसकी हमें साक्षात अनुभूति होती है| जड़तत्व की हमें उसके गुणों द्वारा प्रतीति होती है| ईश्वर का हमें केवल परोक्ष ज्ञान होता है|

लॉक के अनुसार द्रव्य की वह शक्ति जिसके कारण वह हमारी आत्मा में प्रत्यय उत्पन्न करता है 'गुण' कहते है| वे गुणों के आश्रय को द्रव्य कहते हैं| उनके अनुसार हमारा ज्ञान प्रत्ययों से ही बनता है अर्थात प्रत्यय ही हमारे ज्ञान के एकमात्र विषय हैं| प्रत्यय हमारे मन में होते हैं जो कि हमारे इंद्रिय अनुभव से उत्पन्न होते हैं| अनुभव का अर्थ है संवेदन और स्वसंवेदन इंद्रियों और बाह्य पदार्थों के संपर्क से संवेदन होता है तथा अंतःकरण और मानसिक भावों की संपर्क से स्वसंवेदन होता है| हमारा साक्षात संपर्क द्रव्य से ना होकर गुणों से होता है|

जॉन लॉक के अनुसार गुण दो प्रकार के होते हैं- मूल गुण (primary qualities) और गौण या उपगुण (secondary qualities)| मूल गुण वे है जो द्रव्य या वस्तु में पाए जाते हैं और जो हमारी आत्मा में अपने अनुरूप प्रत्यय उत्पन्न करते हैं| मूल गुण द्रव्यों के वास्तविक धर्म है| जब इंद्रियों का इन मूल गुणों से संपर्क होता है, तब यह मूलगुण हमारे मन में संवेदन उत्पन्न करते हैं और उन संवेदनों में अपनी छाप या प्रतिबिंब छोड़ जाते हैं| यह प्रतिबिंब ही प्रत्यय कहलाते हैं| मूल गुणों का काम हमारे मन में संवेदनों के माध्यम से अपने प्रतिबिंब के रूप में प्रत्यय उत्पन्न करने का है| इन मूल गुणों के प्रत्यय द्रव्यों के वास्तविक धर्मो के प्रतिबिंब हैं| मूल गुणों का एक और कार्य यह है कि वे मन में उपगुणों के संवेदन उत्पन्न करते हैं| मूल गुण वस्तुओं में पाए जाते हैं और वे हैं- आकृति, विस्तार, घनत्व, गति, संख्या आदि| इन गुणों को वस्तु से अलग नहीं किया जा सकता| यही हमारे अंदर अपने अनुरूप प्रत्यय उत्पन्न करते हैं| यह गुण अनुभवकर्ता पर निर्भर नहीं करते|

गौण गुण या उपगुण वस्तु अथवा द्रव्य के वास्तविक धर्म नहीं है| वे द्रव्य में नहीं रहते| उपगुण मूल गुणों पर निर्भर होते हैं| वह हमारे मन में ही उत्पन्न होते हैं| वस्तुतः उपगुणों को गुन नहीं कहा जा सकता; क्योंकि वह द्रव्यों के वास्तविक धर्म नहीं है, फिर भी इनको व्यवहार के कारण गुणों का भेद मान लिया गया है| उपगुण वस्तु के धर्म ना होकर हमारे मन के संवेदन मात्र हैं अर्थात उपगुण ज्ञाता पर आश्रित होते हैं| इन संवेदनों को मूल गुण ही उत्पन्न करते हैं| मूल गुणों के बिना उपगुण उत्पन्न नहीं हो सकते| अतः उपगुणों को हमारे मन की कल्पना भी नहीं कही जा सकती; क्योंकि इनको उत्पन्न करने की शक्ति मन में न होकर द्रव्यों के वास्तविक गुणों में है| यह उपगुण हमारे मन में द्रव्यों के मूल गुणों द्वारा उत्पन्न संवेदन मात्र हैं| अतः इन उपगुणों के प्रत्यय द्रव्यों के वास्तविक धर्मों के प्रतिबिंब नहीं है| गौण गुण या उपगुण गंध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द हैं जो एक इंद्रिय द्वारा प्राप्त होते हैं| यह मन में ही उत्पन्न होते हैं| मूल गुणों की शक्ति के कारण इंद्रिय संवेदन के रूप में इनका मन में जन्म होता है|

इस प्रकार घनत्व, विस्तार, आकार आदि प्रत्यय द्रव्यों के वास्तविक मूल गुण है और हमारे मन में प्रतिबिंब हैं| रूप, रस, गंध आदि प्रत्यय द्रव्यों के वास्तविक गुणों के प्रतिबिंब नहीं है| यह वास्तविक गुणों द्वारा उत्पादित इंद्रिय संवेदन मात्र हैं|